जल के लिए आत्मोत्सर्ग

अशोक सरीन
पालमपुर, कांगड़ा (हि.प्र.)

भारत के स्वतन्त्र होने के पूर्व हिमाचल में 31 रियासतें थी। इनमें चम्बा सबसे प्राचीन रियासत रही है। इस रियासत की स्थापना 620 ईसवी में हुई थी और आदित्य वर्मन इसके पहले शासक थे।

ऐतिहासिकता के कई मामलों में चम्बा विश्व सभ्यताओं के इतिहास में सबसे आगे रहा है। हिमालय की पीर पंजाल सभ्यताओं के इतिहास में चम्बा का अनूठा रिकार्ड है। ऐसा रिकार्ड जो लोकतंत्र व्यवस्था की ओर आकर्षित दुनिया में ढूंढना नामुमकिन है। इस रियासत पर एक ही राज परिवार की सैकड़ों पीढ़ियों ने चौदह सौ वर्षो तक निरन्तर राज किया। एक ही परिवार का वर्चस्व तब टूटा जब देश आजाद हुआ और चम्बा रियासत का हिमाचल प्रदेश में विलय हो गया। छठी से उन्नीसवीं सदी तक सूर्यवंशी राज परिवार के एक सौ आठ शासकों ने यहां राजकाज चलाया। विश्व की सबसे लम्बी वंशावली का रिकार्ड चम्बा रियासत के नाम है। चम्बा रियासत के प्रथम शासक आदित्य वर्मन (620ई0) थे और अंतिम 108 वें लक्ष्मण सिंह (1935–1948)।

वर्मन राज परिवार में राजा साहिल वर्मन का नाम चम्बा के इतिहास में उल्लेखनीय है। चम्बा रियासत की राजधानी 620ई0 से 920ई0 तक चम्बा से 67 किलोमीटर दूर बहनपुर जो अब भरमौर के नाम से जाना जाता है, रही है। वर्तमान में इस क्षेत्र में गद्दी लोगों का बसेरा है। इन लोगों का प्रमुख व्यवसाय भेड़–बकरी पालन व खेतीबाड़ी है।

राजा साहिल वर्मन ने अपने कार्यकाल में रियासत की राजधानी अपनी बेटी चम्पा की इच्छा पर बहनपुर से चम्बा स्थानान्तरित की और तभी से यह इस क्षेत्र का मुख्यालय है।

साहिल वर्मन ने चम्बा के साथ बहने वाली रावी नदी के आसपास बसी छोटी–बड़ी रियासतों के राजाओं को अपने अधीन कर लिया। आज जहां चम्बा शहर बसा है उसे राजा साहिल वर्मन ने एक जनक नामक ब्राह्मण से इस शर्त पर लिया था कि नगर में हर विवाह पर राजा के खजाने से उसे आठ चकलिस (चम्बा में प्रवर्तित तांबे का सिक्का) दिये जाएंगे।

जिन दिनों राजा साहिल ने चम्बा को राजधानी बनाया उन दिनों यहां घना जंगल और नाममात्र आबादी थी। यह स्थान बर्फीले पहाड़ की गोद में रावी नदी के किनारे पहाड़ी तलहटी पर स्थित था। चारों ओर नयनाभिराम दृश्य, सुहावना मौसम, वन्य पशु–पक्षी, शांत वातावरण राजपरिवार को बहुत पसंद आया। राजा सहिल अपनी बेटी चम्पा से बहुत प्यार करता था। उसने राजधानी का नाम बेटी के नाम पर चम्पापुर रखा। बाद में यह चम्पापुर से राजपत्रों में चम्बा के नाम से मशहूर हुई। यह तो थी चम्बा रियासत की संक्षिप्त जानकारी। अब जल के महत्त्व की बात करते हैं।

पृथ्वी के 71 प्रतिशत भाग में जल और शेष में पहाड़, जंगल और आबादी है। यह बड़ी बिडम्बना है कि अथाह जल होते हुए भी लोग पानी के लिए तरसते हैं। देश में हर वर्ष सूखा और भयंकर बाढ़ का ताडंव रहता है। देश के महानगरों में जल का अभाव रहने से लोगों को सीमित जल से गुजारा करना पड़ता है।

जरा सोचिए जहां जल सुलभ न हो वहां के लोगों की क्या स्थिति होगी। कुछ ऐसा ही राजा साहिल वर्मन के शासनकाल में चम्बा रियासत में हुआ था। जल के बिना जनता में त्राहि–त्राहि मच गई थी। रियासत के लोगों को कैसे जल मिला था, बड़ी मार्मिक कहानी है। सुधि पाठकों के लिए प्रस्तुत है जल प्रकट होने की सच्ची कथा।

राजा साहिल ने जिस चाव व उत्साह से चम्बा नगर बसाया, इसके बस जाने से उन्हें उतनी ही निराशा हुई। नगर में सब सुविधांए थी। बस एक कमी थी। कमी भी कुछ ऐसी जिसके बिना जीना मुश्किल था। नगर में पानी की बूंद न थी। प्रजा को पानी लाने के लिए तीन मील दूर रावी नदी तक जाना पड़ता था। एक घड़ा पानी लाने में बड़ा समय लगता। रावी नदी से चम्बा नगर तक चढ़ाई होने से शरीर थककर टूटने लगता। एक घड़ा पानी से गुजारा भी न होता। व्यक्ति कुछ समय तक भूखा रह सकता है पर प्यासा नहीं रह सकता।

नगर की जनता की इस समस्या से राजा बहुत दुःखी था। राजा ने प्रजा के हित के लिए पानी लाने के लिए कई स्थानों पर खुदाई करवाई पर जल स्वप्न बन कर रह गया। उन दिनों आज की तरह बोरिंग मशीनें न थी जो धरती में गहराई तक खुदाई कर पानी के संकट को दूर करती है। राजा के सैनिक फावड़े, कुदाल से आठ–दस फीट तक ही खुदाई कर सकते थे।

राजा की चिन्ता, परेशानी दिन व दिन बढ़ रही थी। उसे नगर में जल लाने का कोई उपाय नजर न आ रहा था। एक रात राजा साहिल को कुलदेवी ने दर्शन देकर उससे उदासी का कारण पूछा। राजा ने नगर में पानी न होने की व्यथा कुलदेवी को सुनाई। राजा ने कुलदेवी के आगे हाथ फैला कर प्रार्थना की, ''माँ, मेरी प्रजा पानी के लिए तड़प रही है। मुझसे यह दुःख देखा नही जाता। मुझे इस संकट से उबारो। इसके लिए आप जो आदेश देंगी मैं उसका पूरी तरह से पालन करूंगा।''

कुलदेवी ने कहा,''राजन, यदि तुम अपनी प्रजा को खुश देखना चाहते हो और नगर में पानी का स्वप्न साकार करना चाहते हो तो इसके लिए राज परिवार के किसी सदस्य को पानी के स्त्रोत पर अपना बलिदान देना होगा।'' इतना कह कर कुलदेवी अदृश्य हो गई।

कुलदेवी का आशीर्वाद पाकर प्रजा के हित के लिए राजा अपना बलिदान देने को तैयार हो गया। पर उनकी धर्मपत्नी महारानी सुनयना ने कहा,'' प्राणनाथ, राजा के बिना प्रजा अनाथ हो जाएगी। रियासत को आपकी जरूरत है। मैं प्रजा की माँ हूँ। अपनी संतान की खुशी के लिए मैं यह बलिदान दूंगी। ऐसा संयोग कभी–कभार ही मिलता है। रानी ने पति को समझा कर शांत किया।

राजा पुरोहित ने रानी सुनयना के आत्मोत्सर्ग के लिए शुभ मुहूर्त का दिन निश्चित् किया। उस रोज रानी ने दुल्हन की तरह श्रृंगार किया। प्रजा की आखों में आँसू थे। राज पुरोहित ने महारानी सुनयना की आरती उतारी। वह पालकी में बैठ गई। पालकी उठाने वाले कहारों के साथ राजा साहिल वर्मन और रियासत के लोग रानी की जय–जयकार के गगन भेदी नारे लगाते हुए पानी के उस स्त्रोत की ओर चल पड़े जहाँ रानी ने अपना त्याग करना था। ऊंची पहाड़ी पर पहुंचकर कहारों ने विश्राम करने के लिए पालकी को नीचे रख दिया। रानी ने पालकी से उतरकर ऊपर से नीचे अपने प्यारे चम्बा नगर को निर्निमेष निगाहों से देखा तथा मन ही मन उसे प्रणाम कर कुलदेवी से पानी की प्रार्थना की।

भलोठा नामक स्थान पर जहाँ पानी का स्त्रोत था वहाँ खुदाई की गई। समाधि लेने से पूर्व रानी सुनयना ने अपने पति राजा साहिल वर्मन के पांव छुए और दोनों हाथ जोड़ प्रजा से विदाई ली। राजा व प्रजा सभी की आँखों से आंसू बह रहे थे। रानी ने जीवित समाधि लेकर कुलदेवी के आदेश का पालन किया।

रानी सुनयना के समाधि लेते ही धरती से पानी का स्त्रोत फूट कर बड़े वेग से चम्बा नगर की ओर बहने लगा। पानी देख प्रजा कुलदेवी और सुनयना के जय–जयकार के नारे लगाने लगी। रानी के इस त्याग से उसका नाम अमर हो गया। उस ऊंची पहाड़ी पर जहाँ पालकी से निकल कर रानी सुनयना ने एक नजर चम्बा नगर को देखा था, उस स्थान पर मंदिर बना कर रानी की प्रस्तर मूर्ति स्थापित की गई। बाद में रानी सुनयना का सूही देवी के रूप में देवीकरण हुआ।

चम्बा से कुछ दूर पहाड़ी पर बने सूही के मंदिर तक पहुंचने के लिए 160 सीढ़ियों का निर्माण राजा अजीत सिंह वर्मन (1792–1808) की धर्मपत्नी महारानी शारदा ने करवाया था।

सुनयना की याद में मार्च के महीने में लोक गायक, गायिकाएं गावं–गावं में यह गीत गाकर सुनाती हैं।

"सुतियां सेजां वो राजे जो सुपना जे होया। राजे जो कुल देविया सुपने च आई ने बलि मंगी।"

रानी सुनयना का मेला हर वर्ष अप्रैल माह की 10 से 12 तारीख तक मनाया जाता है। इसमें अधिकतर महिलाएँ भाग लेती हैं।

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

(लोकमान्य तिलक)